सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

कसोटी के सिवाय कीमत नही होती

– शा. हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

परीक्षा के विना स्कूल – बोर्ड, विद्यापीठ या युनिवर्सिटी प्रमाण नहीं देती। इसी तरह भक्ति के मार्ग में भी गुरु शिष्य की परीक्षा के विना अपने पास शिष्य के रुप में स्वीकार नहीं करते । जगत की परीक्षा पाठ्य पुस्तक के आधार पर तैयार करके देते है। लेकिन भक्ति के मार्ग में गुरु शिष्य की परीक्षा कभी भी ले लेते हैं किसी को पता भी नहीं चलता। आज ऐसे ऋषि तथा उनके शिष्य की वात करते हैं।

पौराणिक काल में भारत ऋषि मुनियों का देश कहा जाता था । वर्षो पूर्व भारत वर्ष में धौम्य ऋषि नाम के एक ऋषि हो गये । उत्तम ऋषियों में उनकी गणना होती थी । उनकी प्रसिद्धि से प्रभावित होकर शिष्य वनने के लिये अनेकों लोग आश्रम में आने लगे । प्राथमिक योग्यता जानकर गुरु उन्हें प्रवेश देते थे । शिष्य की योग्यता समझने के बाद ही उन्हें आश्रम की सेवा दी जाती । जिससे शिष्य प्रसन्नतापूर्वक कार्य कर सके, ऐसे शिष्य पर गुरु की कृपा उतरती।

धौम्य ऋषि के आश्रम आरुणिनाम का एकशिष्य आया । एक दिन गुरुजी शिष्य को बुलाकर कहे कि आज से तुम्हें खेत में सेवा करनी है। धान की रोपाई से लेकर कटाई तक सभी देख रेख तुम्हे रखनी है । आरुणि गुरुजी की आज्ञा मस्तक पर चढाया कहीं शंका भी नहीं की हम रहेंगे कहां खायेंगे – पीयेंगे कहाँ ?

गुरु की आज्ञा शिरोधार्य करके आरुणि प्रातः होने ही खेत में पहुंचगये। धान में पानी देना था। क्यारी बनाने आता नहीं था । नाली के सहारे पानी ले आये, लेकिन पानी का इतना वेग था कि मेड़ टूट गई पानी वेग से बाहर जाने लगा। कितना भी मिट्टी डालने पर पानी का वेग रुका नहीं तो पानी के बहाव को रोकने के लिये उस मडे की जगह स्वयं सो गया । पानी रुक गया ।अब उसे यह सरल मार्ग लगा–पानी रोकने का । रात–दिन काम में लगा रहता था उसे भूख–प्यास नहीं लगती । उसे एक मन्ना थी कि गुरु की आज्ञा में कहीं कोई कमी नहीं रहनी चाहिये।

इधर गुरुजीने आरुणि की परीक्षा ले रहे थे उधर अन्य शिष्यों को खाने के लिये बार–बार पूछते थे । फिर भी आरुणि के मन में थोड़ा भी विकार नहीं आया गुरु के प्रति उच्च भावना बनी रही। वह यह सोचता कि आश्रम बड़ा है, छात्रों की संख्या अधिक है, गुरुजी के पास समय का अभाव है, इसलिये हमें गुरुजी से प्राप्त आज्ञा पालन श्रद्धापूर्वक करनी चाहिये।

२५–३० दिन हो गये नहीं अन्न मिला, नही जल। बाद में एकदिन किसी बड़े शिष्य से पूछे कि आरुणि कहाँ है। क्यों दिखाई नहीं दे रहा है ? गुरुजी ! आपने उसे खेत की रखवाली के लिये भेंजा है । उसे धान की फसल में पानी डालना नहीं आता, एक खेत से दूसरे खेत में पानी डालता है जब मेड़ टूट जाती है तब उसे रोकने के लिये मिट्टी नहीं काम करती तो स्वयं सो जाता है। इस तरह बड़े कष्ट के साथ रातदिन काम करता है।

बड़े शिष्य की वात सुनकर गुरुजीने विचार किया कि, चलो वहाँ जाते हैं। वहाँ गुरुजीने देखा कि पानी तो वेग से मेड़ टूट गयी है और आरुणि स्वयं वहाँ सोकर पानी को बहने से रोक रहा है। कपड़ा–शरीर सभी कीचड़ वाला हो गया है। भूख–प्यास से शरीर कृश काय हो गयी है। लेकिन मुख में तेज भासित हो रहा है । यह देख कर गुरुजी बहुत प्रसन्न हुये । उसे पास बुलाये गले लगाकर आशीर्वाद दिये। पुत्र आरुणि ? जगत के इतिहास में तुम्हारा नाम श्रेष्ठ शिष्य के रुप में लिया जायेगा । बड़ा विद्वान बनेगा । जगत में तुम्हारी कीर्ति फैलेगी – कहा जाता है कि –

''नाम रहता काकरा, नाणां नव रहंत ।
कीर्ति केरा कांगरा, पाड्य नव पडंत ॥''

आज भी आरुणि कीर्तमान है । गुरु के आशीर्वाद से यह महान बनकर पूजित हुआ, इसका कारण क्या है।

बालमित्रो ! आरुणि ने जिस तरह गुरु की आज्ञा का अक्षर सह श्रद्धा पूर्वक पालन किया । विरोधया किसी भी प्रकार का प्रश्न नहीं किया । आज्ञा में अचल विश्वास ही उसकी सफलता थी । मित्रों ! आपके गुरुजी भी कभी इस

तरह आपकी परीक्षा लें तो उत्साह तथा प्रेम से उस परीक्षा में सेवा परायण रहेंगे तो निश्चित ही सफलता मिलेगी । आपके ऊपर प्रभु की कृपा होगी ।

अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायणने भी संतो की तथा भक्तों की अनेकोंबार परीक्षा ली है ? इस परीक्षा को संत तथा हरिभक्त हंसते हुये स्वीकार किये है । इसलिये भगवान के साथ उन संतो को तथा हरिभक्तों को याद करते हैं । इतना तो याद रखना कि विना परीक्षा के किसी की कीमत नहीं होती । मिट्टी को सुन्दर रुप देना हो, लकड़ी में कला कृतिकरना हो, कपड़े का पैन्ट सर्ट बनाना हो, तो इन सभी की बड़ी से बड़ी पराक्षा ली जाती है । तभी अपनी इच्छानुसार उसे रुप दिया जा सकता है, जीवन को सुन्दर बनाना हो तो आरुणि की तरह परीक्षा देनी ही होगी । तभी सर्वत्र विजय होगी । इतना यदा रखना ।

●

इष्टदेव के नाम की महिमा

- साधु श्रीरंगदास (गांधीनगर)

स्वामिनारायण संप्रदाय की आज्ञा से मोक्षरुपी सदाव्रत को भारत के कोने कोने में संत लोग चला रहे है । जिस के लिये सत्संग कथा तथा भगवान में दृढ निश्चय कराते है । कितने प्रान्तो में भाषाकीय कमी के कारण मात्र मंत्र ज्ञान देते हैं । संत अपने सद्आचरण से भक्ति का मार्ग बताते है ।

परंतु प्रत्येक क्षेत्र में सज्जन व्यक्ति मिलना मुश्किल है । सभी वन में चन्दन नहीं होता, सभी नागो में मणी नहीं होती, इसी तरह मुमुक्षु भी कम होते है । संत ऐसे मुमुक्षुओं को सद्उपदेश देते फिर भी ऐसे संतो की निन्दा करने वाला एक वर्ग तो रहता ही है । उपरोक्त बाते प्राचीन काल से चली आ रही है ।

पहले के जमाने में उत्तर प्रदेश को हिन्दुस्तान कहा जाता था । उसी हिन्दुस्तान की वात है - यहाँ पर सन्तों ने सत्संग का प्रचार किया । भगवान के उपासना का मार्ग बताया । परिणाम स्वरुप विंद नाम के एक युवक को सत्संग का रंग लग गया । संतो से माला लेकर माला फेरने लगा, मानसी पूजा करने लगा, दंडवत् ध्यान इत्यादि करने लगा ।

नित्य क्रम के अनुसार सूर्योदय से पूर्व उठ जाता, स्नान पूजा सभी करता । इस तरह का व्यवहार माता-पिताने अपने युवान बेटे में देखकर बहुत प्रसन्न थे । लेकिन उसके साथ घर में उसकी काकी रहती थी । विन्दा की काकी को उसकी भजन अच्छी नहीं लगती, उसे वात वात में टोकती और कहती कि यह जो भी करते हो यह ठीक नहीं । रात-दिन स्वामिनारायण, स्वामिनारायण क्या जपता रहता है । गाँव में धूम-धूम के शिकायत करती और कहती कि विंदा एकदम विगड़ गया है -

''कहें विंदा तो बगड़ी गयो, करी सत्संग स्वामीनो थयो ।''

निंदा करने वालो को खोजना नही पड़ता । विंदा की काकी सभी से कहती है हमारा विंदा जब भोजन करने बैठता है तो आंख बंद करके क्या क्या बोलता है, क्या यह खाने की रीत है । इस तरह रात दिन विंदा के विरोधमें बोलती रहती है ।

''श्वासे श्वासे एज स्मरण,
भूली नहीं ज्यां लगी आव्युं मरण ।।''

वह जब तक जीवित रही तब तक विन्दा की निंदा करती रही । कोई विंदा से कहा तब कि घर का सभी काम तूं करता है फिर भी तेरी काकी तेरी निंदा करती है, इस यह वह कहता काकी जो भी करती है उसमें हम दोनों का भला है । हमें इस लिये फायदा है कि मेरी काकी जितना इधर-उधर निन्दा करती है उससे हमारा विश्वास और दृढ हो जाता है । मेरी भक्ति कैसी है वह मेरी काकी से पुष्ट हो रही है । उसका लाभ कैसे ? तो एकबार निन्दा करते समय मेरा नाम लेती है तो एक बार भगवान का नाम लेती हैं । उसे भगवान का नाम लेने के लिये माला हाथ में दिया जाय तो माला हाथ में नहीं लेगी, उसे कहूं कि स्वामिनारायण - स्वामिनारायण पांच मिनट तूं बोल तो नहीं बोलेगी, लेकिन मेरी निंदा के साथ दशबार भगवान का नाम लेती है तो निश्चित ही भगवान उसका भला करेंगे ।

संयोग वश मरने के समय उसके सामने भयंकर यमदूत दिखाई दिये । अब वह चिल्लाने लगी । विंदा उसके पास गया तो उसी तरह से हमें गाली देते हुए भगवान को भी नाम लेकर गाली देने लगी ।

काकी ने ज्यों भगवान का नाम लिया कि यमदूत वहाँ से हट गये । अब काकी विंदा से कहने लगी कि बेटा अपने

पेईज नं. १८

भगवान को तूं बुलाले, उन्हीं कानाम लेते ही यमदूत दूर हो गये। अन्तिम समय में काकी को भगवान में विश्वास हो गया। फिर विंदा ने कहा कि काकी आप स्वामिनारायण स्वामिनारायण की धुन कीजिये। भगवान जरुर आयेंगे।

तुरंत भगवान वहाँ पधारे हैं। यमदूत वहाँ से चले गये - निष्कुलानंद स्वामीने कहा है -

''सर्वे लोक कहे धन्य धन्य,
आवडुं शीयुं डोशीनुं पुन्य।''

आप देखे कि काकी जीवन में कभी माला फेरी नहीं थी। कभी सत्संग नही की थी, भजन-भक्ति नहीं की थी, फिर भी भगवान उसके किस पुण्य से अपने धाम में ले गये।

मित्रों ! कितनी अच्छी वात है। इससे हमें दो उपदेश मिलता है प्रथम तो यह कि भगवान के भक्त को भजन भक्ति में विघ्न आता है फिर भी अपने मार्ग से कभी हटना नहीं चाहिये। ''मस्तक जाता रे नव मेले टेक विसारी। इससे भगवान प्रसन्न होते हैं। दूसरी वात यह कि भगवान के नाम का प्रताप है। इसका प्रताप प्रभाव ऐसा है कि कितनी बड़ी आपत्ति हो नाम मात्र के स्मरण से रक्षा होती है। यमदूत दूर हट जाते हैं।

स्वामिनारायण, स्वामिनारायण ऊंचे सादे गाय,
सांभडीने जमजूत तेने दूरथी लागे पाय।

ऐसे प्रतापी स्वामिनारायण महामंत्र का जप जो भी करेगा उसके अन्तकाल में भगवान स्वामिनारायण स्वयं आकर अपने धाम में ले जायेंगे।

(श्रीहरि ऐश्वर्य दर्शन पुस्तक के आधार पर)

हमारे आगामी उत्सवों की यादी

कार्तिक शुक्ल-५ लाभ पंचमी ता. ३१-१०-२०११ सोमवार को कांकरिय मंदिर में बालस्वरुप कष्टभंजन देव का पाटोत्सव।

कार्तिक शुक्ल-११ देव प्रबोधिनी एकादशी रविवार ता. ६-११-२०११ को तुलसी विवाह प्रारंभ।

कार्तिक शुक्ल-१२ सोमवार ता. ७-११-११ को वडताल में पाटोत्सव, अहमदाबाद रंग महोल घनश्याम महाराज का पाटोत्सव।

कार्तिक शुक्ल-१३ मंगलवार ता. ८-११-११ को मकनसर (मोरबी) मंदरि में पाटोत्सव।

कार्तिक शुक्ल-१४ ता. ९-११-११ बुधवार सिद्धपुर मंदिर में पाटोत्सव।

कार्तिक शुक्ल-१५ ता. १०-११-११ गुरुवार को मुकुटोत्सव पूनम (देव दीपावली)।

कार्तिक कृष्ण-२ ता. १२-११-११ शनिवार को सुरेन्द्रनगर मंदिर का पाटोत्सव।